

विश्व दीप दिव्य संदेश

मासिक शोध पत्रिका

वर्ष 29 | अंक 10

विक्रम संवत् 2082

अक्टूबर 2025 | पृष्ठ 34

संरक्षक : विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी



प्रकाशक

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान

(राजस्थान संस्कृत अकादमी से सम्बद्ध)

कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर



विश्व दीप दिव्य संदेश

मासिक शोध पत्रिका

वर्ष 29 | अंक 10

विक्रम संवत् 2082

अक्टूबर 2025 | पृष्ठ 34

परामर्शदाता

प्रो. बनवारीलाल गौड़

प्रो. कैलाश चतुर्वेदी

डॉ. शीला डागा

प्रो. (डॉ.) गणेशीलाल सुथार

प्रधान सम्पादक

श्री सोहन लाल गर्ग

श्री एम.एल. गर्ग

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

सह-सम्पादक

डॉ. रघुवीर प्रसाद शर्मा

तिबोर कोकेनी

श्रीमती अन्या वुकादिन

- प्रमुख संरक्षक -

परम महासिद्ध अवतार श्री अलखपुरी जी

परम योगेश्वर स्वामी श्री देवपुरी जी

- प्रेरणास्रोत -

भगवान् श्री दीपनारायण महाप्रभुजी

- संस्थापक -

परमहंस स्वामी श्री माधवानन्द जी

- संरक्षक -

विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस

श्री स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी

- प्रबन्ध सम्पादक -

महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी

प्रकाशक

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान

(राजस्थान संस्कृत अकादमी से सम्बद्ध)

कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर



अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय	डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा	3
2. YOGA SUTRAS OF PATANJALI	Swami Maheshwaranandapuri	4
3. भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों का महत्त्व एवं इतिहास लेखन में उनकी भूमिका	डॉ. नीलम	7
4. ज्ञान परंपरा और संस्कृति का अमूल्य खजाना पांडुलिपियाँ	सुभम कुमार सिंह	15
5. आयुर्वेद पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में एक अध्ययन	डॉ. कृष्ण मुरारी जैमिन	19
6. सूचना सिद्धांत में विचलन माप का विश्लेषण	पारुल खंडेलवाल संध्या पारीक	21
7. हस्तलिखित ग्रंथों की परंपरा में अर्थशास्त्र	मिताली कुमावत	24
8. पाण्डुलिपियों का महत्त्व	डॉ. अनीता व्यास	29
4. राष्ट्रोपनिषत्	स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर	31

विश्वदीप दिव्य संदेश पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क 800/- रुपये

खाता संख्या : 5013053111

IFS Code : KKBK0003541

मुद्रण : कन्ट्रोल पी, जयपुर - मो. : 9549666600

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का दशम् अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। डॉ. नीलम द्वारा लिखित **भारतीय इतिहास में पाण्डुलिपियों का महत्त्व एवं इतिहास लेखन में उनकी भूमिका** लेख में भारतीय इतिहास लेखन में उपयोग की गई प्रमुख पाण्डुलिपियों का सम्पूर्ण विश्लेषण दिया है। शुभम कुमार सिंह द्वारा लिखित **"ज्ञान परम्परा और संस्कृति का अमूल्य खजाना: पाण्डुलिपियाँ"** लेख में भारतीय परम्परा में पाण्डुलिपियों के महत्त्व को स्पष्ट किया है। डॉ. कृष्ण मुरारी जैमिन द्वारा लिखित **आयुर्वेद पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में एक अध्ययन** लेख में भारतीय चिकित्सा परम्परा में आयुर्वेद के महत्त्व को स्पष्ट करते हुये पाण्डुलिपियों को आयुर्वेद चिकित्सा के ज्ञान का भण्डार कहा है। पारुल खंडेलवाल द्वारा लिखित **सूचना सिद्धांत में विचलन माप का विश्लेषण** लेख में सूचना सिद्धांत का परिचय देते हुए विचलन माप के लाभ, सीमाएँ और भविष्य की संभावनाओं को वर्णित किया है। मिताली कुमावत द्वारा लिखित **"हस्तलिखित ग्रन्थों की परंपरा में अर्थशास्त्र"** लेख में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में पाण्डुलिपियों की महत्ता पर प्रकाश डाला है। डॉ. अनीता व्यास द्वारा लिखित **पाण्डुलिपियों का महत्त्व** लेख में पाण्डुलिपियों का ऐतिहासिक महत्त्व बताते हुए आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पाण्डुलिपि महत्ता को प्रतिपादित किया है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

YOGA SUTRAS OF PATANJALI

A Guide to Self-knowledge

**Mahamandleshwar Paramhans
Swami Maheshwaranandapuri**

विभूति पादः
VIBHŪTI-PĀDAḤ

मूर्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम् ॥ ३३ ॥

33. mūrdha-jyotiṣi siddha-darśanam

mūrdha – vertex

jyoti – light

siddha – perfect being

darśana – vision, sight, contact

***Samyama* on the light at the crown of the head opens the vision of the realised masters.**

In meditation on the *Sahasrāra Chakra*, the yogi receives visions of saints and divine incarnations. To meet them is a great blessing. They give teachings, valuable information and transmit light, power and wisdom.

The following exercises serve to awaken the crown center (*Sahasrāra Chakra*): *Shirshāsana*, *Salabhāsana*, *Kapalāsana* and *Kriyas*. (See "The Hidden Powers in Man – Chakras and Kundalini" by Paramhans Swāmī Maheshwarānanda).

प्रातिभाद्वासर्वम् ॥ ३४ ॥

34. prātibhād-vāsarvam

prātibhāt (prātibha) – quick comprehension

vā – or

sarvam – everything

Or one acquires all this by inspiration.

Yogis who have already attained higher levels of consciousness in previous lives, as well as holy incarnations, open up all powers, wisdom and knowledge, without performing extended practices, in a flash of enlightenment bestowed upon them by the personally worshipped deity (*Ishta-Devatā*) and the grace of the Guru.

हृदयेचित्तसंवित् ॥ ३५ ॥

35. hrdayecitta-saṃvit

hrdaya – heart

citta consciousness

saṃvit – understanding, perception

***Samyama* on the heart center (*Anāhata Chakra*) gives knowledge about the nature of consciousness.**

The heart is also called the abode of God (*brahmā-pūra*) in Sanskrit. In the centre of the heart – and not in the brain, as many believe – resides the *ātma*, the divine light and consciousness. In the *samādhi*, the *brahmā-nādi* is active, connecting the *Anāhata chakra* (heart center) and *Sahasrāra chakra* (crown center).

In the Mundaka Upanishad (II.2.1) it says:

"Bright but hidden dwells the Self in the heart. Everything that moves, breathes, opens and closes, lives in the Self. It is the source of love and can be known only through love, not through thought. This is the goal of life. Achieve this goal!"

In the Chandogya Upanishad (8.1.1-5) it is written, "In this castle of *Brahman* (the body), there is a small lotus (the heart centre). In it is a tiny empty space. What is in this, that one should seek, that one should strive to know ... This small space inside the heart is truly as big as the universe. It contains heaven and earth, fire and wind, sun and moon, lightning and stars. In it is contained all that is visible, and also that which is not visible. Not does this age by the aging of the body, not does it die when the body dies. This is the true castle of God, which is in the inner room of the heart."

Through *samyama* on the heart center, the *siddhi* arises to be able to directly absorb the feelings of others. With the opening of the heart chakra, understanding and empathy for all living beings develop. This results in such a kind and heartfelt aura that everyone likes that person. It is aptly said, "They have won my heart." However, it is also said, "They are heartless." "They have no heart". To do something to satisfy one's own wants and desires that hurts others – that is heartless.

Before you start anything, first ask your heart if what you want to do is right. Do not ask your intellect. The intellect always tends to find excuses and excuses for selfish behaviour. The heart tells the truth – you can know it by its beat. When you think or want to do something beautiful and good, at the same time you also have a pleasant, harmonious feeling in your heart. It beats calmly and you feel good about it. But if your intentions are impure, the heartbeat becomes irregular and restless.

Many people have already had the experience at customs that the customs officer asks if there is anything to declare. You say: "No", but at the same time your heart is pounding and you think: "Yes, I would have something to declare. I hope the officer doesn't start searching my luggage ..."



भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों का महत्त्व एवं इतिहास लेखन में उनकी भूमिका

डॉ. नीलम

सहायक प्रोफेसर

अपेक्स युनिवर्सिटी, जयपुर

सारांश (Abstract)

यह शोध-पत्र भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों के महत्त्व तथा भारतीय इतिहास लेखन में उपयोग की गई प्रमुख पांडुलिपियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पांडुलिपियाँ भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक संरचना, धार्मिक मान्यताओं तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों का सबसे प्रामाणिक स्रोत रही हैं। इतिहासकारों ने वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, संगम साहित्य, बौद्ध-जैन ग्रंथों, संस्कृत काव्यों, फारसी इतिहास-ग्रंथों और प्रशस्तियों जैसे अनेक पांडुलिपीय स्रोतों का उपयोग करके भारत के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक इतिहास का पुनर्निर्माण किया है। साथ ही, यह शोध-पत्र संरक्षण, डिजिटाइजेशन और शोध की चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द (Keywords)

पांडुलिपि, इतिहास लेखन, प्राथमिक स्रोत, वेद, संगम साहित्य, प्रशस्ति, संरक्षण, भारतीय इतिहास

प्रस्तावना (Introduction)

भारत की ज्ञान-परंपरा विश्व में सबसे प्राचीन और समृद्ध मानी जाती है। मौखिक परंपरा के बाद लिखित संस्कृति के विकास के साथ ही पांडुलिपियों ने समाज और इतिहास की संरचना में एक निर्णायक भूमिका निभाई। ताड़पत्र, भोजपत्र, कपड़े, चमड़े और कागज पर हाथ से लिखे गए ये दस्तावेज भारतीय जीवन के विविध पहलुओं की झलक प्रदान करते हैं।

पांडुलिपियाँ न केवल धार्मिक या साहित्यिक कृतियाँ हैं, बल्कि ये इतिहास के प्राथमिक स्रोत (Primary Sources) भी हैं। इतिहासकारों ने इन्हीं स्रोतों के आधार पर भारत के प्राचीन और मध्यकालीन काल का क्रमबद्ध इतिहास लिखा है।

पांडुलिपियों की संकल्पना और स्वरूप

भारत में पांडुलिपियाँ केवल लिखित अभिलेख नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत हैं। इनका दायरा अत्यंत व्यापक है। प्राचीन भारत में लेखन सामग्री सुलभ नहीं थी। इसलिए जो भी ज्ञान लिपिबद्ध किया गया, वह अत्यंत महत्वपूर्ण, चयनित और संरक्षित था। palm-leaf, birch-bark, bhojpatra, ताड़पत्र, कपड़े और पशुचर्म पर लिखी पांडुलिपियाँ भारतीय सांस्कृतिक स्मृति का आधार बनीं।

उदाहरण:

- वेद एवं उपनिषदों के विभिन्न शाखागत संस्करण
- बौद्ध त्रिपिटक संग्रह
- जैन आगम ग्रंथ

पांडुलिपियों के प्रकार

- धार्मिक ग्रंथ: वेद, उपनिषद, पुराण
- साहित्यिक कृतियाँ: रामायण, महाभारत, नाटक, काव्य
- वैज्ञानिक ग्रंथ: आयुर्वेद, गणित, खगोल, वास्तु, रसायन
- ऐतिहासिक दस्तावेज: प्रशस्तियाँ, राजकीय आदेश, ताम्रपत्र
- भाषा एवं दर्शन: व्याकरण, अलंकार, टीकाएँ

प्रमुख लिपियाँ

ब्राह्मी, शारदा, देवनागरी, तमिल-ब्राह्मी, बंगाली, कन्नड़, तेलुगु, फारसी आदि।

भारतीय इतिहास में पांडुलिपियों का महत्व

राजनीतिक इतिहास का मूल आधार

कई पांडुलिपियों में राजाओं की वंशावलियाँ, युद्ध विवरण, प्रशासनिक नीतियाँ और दान-पत्र संकलित हैं।

उदाहरण:

- राजतरंगिणी (कल्हण)
- पृथ्वीराज रासो
- तिरुमलाई नायकन वंशावली

१. सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का दर्पण

पांडुलिपियों में वर्णव्यवस्था, विवाह, शिक्षा, चिकित्सा पद्धति, विज्ञान, रीति-रिवाज और लोक-परंपराओं का विस्तृत वर्णन मिलता है।

उदाहरण:

- मनुस्मृति
- याज्ञवल्क्य स्मृति
- कामसूत्र
- चरक तथा सुश्रुत संहिताएँ

२. भाषायी और साहित्यिक विकास का आधार

भारत में संस्कृत, प्राकृत, पाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, फारसी, उर्दू, ब्रजभाषा, अवधी आदि भाषाओं में पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं। यह भाषाई विविधता भारतीय समाज के बहुभाषी चरित्र को दर्शाती है।

३. कला, वास्तुकला और विज्ञान का दस्तावेजीकरण

शिल्पशास्त्र, वास्तुशास्त्र, संगीत शास्त्र और गणितीय ग्रंथों की कई प्राचीन पांडुलिपियाँ आज भी शोधकर्ताओं के लिए बहुमूल्य स्रोत हैं।

४. समाज और संस्कृति का दर्पण

प्राचीन भारतीय समाज की संरचना, रीति-रिवाज, त्योहार, विवाह प्रथाएँ, शिक्षा और व्यापार का विवेचन अनेक पांडुलिपियों में मिलता है।

५. राजनीतिक इतिहास का निर्माण

प्रयाग प्रशस्ति, राजतरंगिणी, शिलालेख, ताम्रपत्र और अर्थशास्त्र जैसे स्रोतों ने राजवंशों, युद्धों, कर-व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना को उजागर किया।

६. धार्मिक इतिहास का आधार

हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म की मूल शिक्षाएँ इन्हीं पांडुलिपियों में सुरक्षित हैं।

७. विज्ञान और तकनीक का संरक्षण

चरक-संहिता, सुश्रुत-संहिता, सूर्यसिद्धांत, आर्यभटीय आदि ग्रंथों ने चिकित्सा, खगोल, गणित और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपरा को संरक्षित किया।

८. भाषा और साहित्य का विकास

पांडुलिपियाँ भारतीय भाषाओं—संस्कृत, प्राकृत, तमिल, अपभ्रंश—के विकास का साक्ष्य हैं।

नीचे दी गई सूची को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है:

- (A) प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ,
- (B) मध्यकालीन पांडुलिपियाँ,
- (C) औपनिवेशिक काल की पांडुलिपियाँ।

A. प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ (Vedic to Gupta Period)

1. वेद एवं उपनिषद

- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
- उपनिषद: ईश, केन, कठ, छांदोग्य आदि

महत्व: धर्म, अर्थव्यवस्था, समाज संरचना, प्रारंभिक राजनीतिक संगठन का आधार।

2. बौद्ध पांडुलिपियाँ

- त्रिपिटक (विनय, सुत्त, अभिधम्म)
- दीपवंश, महावंश

महत्व: बौद्ध समाज का इतिहास, अशोक के बाद का राजनीतिक इतिहास।

3. जैन आगम

- उत्तराध्ययन सूत्र
- आचारांग
- कल्पसूत्र

महत्व: श्रमण परंपरा, समाज सुधार, व्यापारिक समुदायों के इतिहास का महत्व।

4. पुराण साहित्य

- विष्णु, भागवत, स्कंद, ब्रह्मांड पुराण आदि

महत्व: वंशावली, भूगोल, समाज और धर्म विवरण।

5. संस्कृत महाकाव्य एवं नाटक

- कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, दंडी की कृतियाँ

महत्व: सामाजिक मान्यताएँ, कला, राजनीति, नारी स्थिति का वर्णन।

6. चिकित्सा और विज्ञान पांडुलिपियाँ

- चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, आर्यभटीय

महत्व: प्राचीन विज्ञान एवं चिकित्सा इतिहास का आधार।

B. मध्यकालीन भारतीय पांडुलिपियाँ

1. फारसी-उर्दू ऐतिहासिक पांडुलिपियाँ

- तारीख-ए-फिरोजशाही (जियाउद्दीन बरनी)
- अकबरनामा और आईन-ए-अकबरी (अबुल फजल)
- तारीख-ए-गुलशन-ए-राहत

महत्व: प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कर व्यवस्था, दरबार संस्कृति।

2. क्षेत्रीय भाषाओं की पांडुलिपियाँ

- पृथ्वीराज रासो
- तीर्थयात्रा वर्णन (तीर्थयात्रा साहित्य)
- तमिल संगम साहित्य

महत्व: स्थानीय राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था।

3. राजतरंगिणी (कल्हण)

महत्व: कश्मीर का क्रमबद्ध, तर्कसंगत राजनीतिक इतिहास।

4. भक्ति और सूफी परंपरा की पांडुलिपियाँ

- कबीर बीजक
- गुरु ग्रंथ साहिब (प्रारंभिक स्वरूप)
- सूफी-मत ग्रंथ

महत्व: धर्म-सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक समन्वय।

C. औपनिवेशिक काल की पांडुलिपियाँ (17th–19th Century)

- ईस्ट इंडिया कंपनी के अभिलेख
- यात्रियों के विवरण (बरनियर, बर्ड, फैदर)

- स्थानीय प्रशासनिक दस्तावेज

महत्व: भारत के अंतिम पूर्व-आधुनिक इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत।

इतिहास लेखन में पांडुलिपियों का समग्र योगदान — विस्तृत

1 स्रोत सामग्री के रूप में विश्वसनीयता

पांडुलिपियों में लिपिबद्ध सामग्री घटनाओं के समकालीन साक्ष्य प्रदान करती है, जो इतिहासकारों द्वारा क्रॉस-रेफरेंस करके सत्यापित की जाती है।

2 इतिहास का बहुआयामी पुनर्निर्माण

धर्म, राजनीति, समाज, अर्थशास्त्र, कला, विज्ञान—हर क्षेत्र के स्रोत उपलब्ध होने से इतिहास-लेखन बहुआयामी बनता है।

3 वैकल्पिक और उपेक्षित इतिहास का पुनर्पाठ

महिला इतिहास, जनजातीय इतिहास, लोक-इतिहास भी पांडुलिपियों से उजागर होते हैं।

पांडुलिपि संरक्षण और चुनौतियाँ — विस्तृत विश्लेषण

1 संरक्षण की चुनौतियाँ

- जैविक क्षय (fungus, insects, humidity)
- प्राकृत सामग्री (ताड़पत्र, भोजपत्र) का नष्ट होना
- घुमंतू आक्रमणों में नष्ट होना
- औपनिवेशिक काल में चोरी और निर्यात

2 आधुनिक संरक्षण प्रयास

- राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India)
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन
- डिजिटल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट

3. सरकारी प्रयासः

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (2003), डिजिटाइजेशन, कैटलॉगिंग, Manuscript Resource Centres।

निष्कर्ष (Conclusion)

पांडुलिपियाँ भारतीय इतिहास की मूल आत्मा हैं। इतिहासकारों ने इन्हीं स्रोतों के आधार पर भारत के प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास का क्रमबद्ध पुनर्निर्माण किया है। इनसे समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, विज्ञान और भाषा-परंपरा का वास्तविक स्वरूप प्राप्त होता है। इसलिए पांडुलिपियों का संरक्षण, अध्ययन और डिजिटाइजेशन अत्यंत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भारतीय सभ्यता की इस अमूल्य धरोहर को समझ सकें।

संदर्भ सूची (References)

1. राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, भारत सरकार – रिपोर्टें
2. शर्मा, राम शरण – भारत का प्राचीन इतिहास
3. Pollock, Sheldon – *The Language of the Gods in the World of Men*
4. Kane, P.V. – *History of Dharmashastra*
5. Stein, M.A. – *Rajatarangini*
6. Altekar, A.S. – *Education in Ancient India*



ज्ञान परंपरा और संस्कृति का अमूल्य खजाना पाण्डुलिपियाँ

सुभम कुमार सिंह
एम.ए. अर्थशास्त्र के छात्र
अपेक्स यूनिवर्सिटी

परिचय

मानव सभ्यता ने सदैव ज्ञान, विचार और संस्कृति को संरक्षित करने के लिए लिखित शब्द पर भरोसा किया है। मुद्रण यंत्र और पुस्तकों के व्यापक प्रसार से पहले समाज अपने बौद्धिक कार्यों और उपलब्धियों को पाण्डुलिपियों में दर्ज करता था। ये हस्तलिखित दस्तावेज़ केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि वे विचार, विश्वास, विज्ञान और सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों का जीवित इतिहास प्रस्तुत करते हैं।

पाण्डुलिपियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें पूर्वकाल की अपरिवर्तित ज्ञान-परंपरा और विचारों तक सीधा पहुँच प्रदान करती हैं। भारतीय परंपरा में पाण्डुलिपियों का विशेष स्थान है। ये केवल धार्मिक या साहित्यिक रचनाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि राजनीति, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, गणित और अर्थशास्त्र जैसे विषयों को भी समाहित करती हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से पाण्डुलिपियाँ अत्यंत मूल्यवान् स्रोत हैं क्योंकि इनमें कर व्यवस्था, व्यापारिक प्रथाओं, कृषि पद्धतियों और शासन से संबंधित सूचनाएँ सुरक्षित हैं। इस लेख में पाण्डुलिपि का अर्थ, उसका महत्व और अर्थशास्त्र में उसकी प्रासंगिकता पर चर्चा की गई है।

पाण्डुलिपि क्या है?

“पाण्डुलिपि” शब्द लैटिन भाषा के दो शब्दों से बना है: *manu* (हाथ) और *scriptus* (लिखा हुआ)। सबसे सरल अर्थ में, पाण्डुलिपि का मतलब है हस्तलिखित दस्तावेज़। ऐतिहासिक रूप से ये पत्तों (ताड़पत्र), भोजपत्र, कपड़े, चमड़े, चर्मपत्र और बाद में कागज़ पर लिखी जाती थीं। विद्वान् और लिपिक इन्हें बार-बार नकल करके पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित करते थे।

आधुनिक समय में “मैन्युस्क्रिप्ट” शब्द का प्रयोग कभी-कभी अप्रकाशित लेखन (जैसे किताब का मसौदा या शोध पत्र) के लिए भी किया जाता है। लेकिन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में इसका आशय प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों से है।

पाण्डुलिपियों का महत्व

पाण्डुलिपियों का महत्व अनेक स्तरों पर समझा जा सकता है:

1. ज्ञान का संरक्षण – प्राचीन समाजों में पाण्डुलिपियाँ ज्ञान को संग्रहीत और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने का प्रमुख साधन थीं।
2. सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्य – ये उस समय के विश्वासों, परंपराओं और जीवन शैली का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं।
3. वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से – आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, गणित और तकनीक पर आधारित कई खोजें इन्हीं पाण्डुलिपियों में सुरक्षित हैं।
4. राजनीतिक और विधिक महत्व – कुछ पाण्डुलिपियों में कानून, संधियाँ और प्रशासनिक आदेश मिलते हैं, जो शासन व्यवस्था को समझने में सहायक हैं।
5. आर्थिक प्रासंगिकता – इनमें कर प्रणाली, व्यापार, कृषि और संसाधन प्रबंधन से जुड़ी मूल्यवान् सूचनाएँ मिलती हैं।
6. परंपरा की निरंतरता – नकल और संरक्षण की प्रक्रिया के कारण पाण्डुलिपियाँ ज्ञान और विचारों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखती रही हैं।

भारतीय परंपरा में पाण्डुलिपियाँ

भारत विश्व की सबसे समृद्ध पाण्डुलिपि परंपराओं में से एक का धनी है। यहाँ लगभग पचास लाख से अधिक पाण्डुलिपियाँ विभिन्न लिपियों (देवनागरी, ब्राह्मी, शारदा, ग्रन्थ, फ़ारसी आदि) में संरक्षित मानी जाती हैं। ये ताड़पत्र,

भोजपत्र और कागज पर लिखी गई हैं और दर्शन, कला, कानून, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे विविध विषयों को समाहित करती हैं।

नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्र और बाद में बनारस व जयपुर जैसे नगर पाण्डुलिपि संरक्षण के बड़े केंद्र बने। राजदरबारों और मंदिरों ने भी इनका संरक्षण किया।

पाण्डुलिपियाँ और अर्थशास्त्र

पाण्डुलिपियों में अर्थशास्त्र का विशेष महत्व है। समाज की आर्थिक संरचना को समझने के लिए ये अमूल्य स्रोत हैं।

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र – प्राचीन भारत की सबसे प्रसिद्ध आर्थिक पाण्डुलिपि *अर्थशास्त्र* है। इसमें कर नीति, व्यापारिक नियंत्रण, मुद्रा प्रबंधन और राज्य के वित्तीय कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन है।
2. वैदिक और उत्तरवैदिक ग्रंथ – ऋग्वेद, मनुस्मृति, महाभारत, जातक कथाएँ और बौद्ध-जैन ग्रंथों में कृषि, श्रम विभाजन, वस्तु-विनिमय और बाज़ार व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।
3. मध्यकालीन पाण्डुलिपियाँ – इनमें मुगलकालीन राजस्व व्यवस्था, ज़मींदारी प्रथा और व्यापारिक करों का विवरण मिलता है।
4. आर्थिक दर्शन – जैन और बौद्ध ग्रंथों में नैतिक व्यापार, संयमित उपभोग और संतुलन पर विचार मिलते हैं, जो आधुनिक “सतत् विकास” की अवधारणाओं से मेल खाते हैं।

आधुनिक समय में महत्व

आज पाण्डुलिपियों का महत्व केवल इतिहास तक सीमित नहीं है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से इन्हें संरक्षित और विश्वभर में उपलब्ध कराया जा रहा है।

1. ऐतिहासिक अर्थव्यवस्था की समझ – शोधकर्ता इनसे प्राचीन और मध्यकालीन आर्थिक प्रणालियों का पुनर्निर्माण करते हैं।

2. नीतिगत शिक्षा – कर नीति और जनकल्याण पर कौटिल्य के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।
3. सतत् विकास और नैतिकता – संयम और संतुलन जैसे विचार आधुनिक कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और टिकाऊ अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों से जुड़े हैं।
4. वैश्विक बौद्धिक धरोहर – पाण्डुलिपियाँ यह दर्शाती हैं कि आर्थिक चिंतन केवल आधुनिक या पाश्चात्य परंपरा की देन नहीं है।

संरक्षण की चुनौतियाँ और प्रयास

पाण्डुलिपियाँ नाजुक होती हैं। जलवायु, कीट और उपेक्षा से वे क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। कई पाण्डुलिपियाँ विलुप्त भाषाओं और लिपियों में हैं, जिन्हें पढ़ना कठिन है।

फिर भी भारतीय पाण्डुलिपि मिशन और अन्य डिजिटल परियोजनाएँ इन्हें सुरक्षित रखने और शोधकर्ताओं तक पहुँचाने का कार्य कर रही हैं। डिजिटलीकरण से इन्हें न केवल नष्ट होने से बचाया जा रहा है बल्कि अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच भी बनाई जा रही है।

निष्कर्ष

पाण्डुलिपियाँ केवल पुराने दस्तावेज़ नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की बौद्धिक यात्रा के जीवित प्रमाण हैं। उनका महत्व इस बात में है कि वे हमें ज्ञान, परंपरा और संस्कृति का अमूल्य खजाना सौंपती हैं।

अर्थशास्त्र के क्षेत्र में पाण्डुलिपियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* और मध्यकालीन राजस्व अभिलेख इस बात के उदाहरण हैं कि कैसे समाज संसाधनों का प्रबंधन करता था, व्यापार को संगठित करता था और वित्तीय नीतियाँ बनाता था।

आज के नीति-निर्माताओं और अर्थशास्त्रियों के लिए ये पाण्डुलिपियाँ न केवल इतिहास की झलक देती हैं बल्कि व्यावहारिक मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करती हैं। वे हमें यह स्मरण कराती हैं कि भविष्य की समस्याओं का समाधान अतीत की बुद्धिमत्ता में निहित हो सकता है।



आयुर्वेद पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में एक अध्ययन

डॉ. कृष्ण मुरारी जैमिन

पद-अध्येता, अंतिम वर्ष

विभाग-संहिता एवं मौलिक सिद्धांत

संस्थान-राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय चिकित्सा परम्परा में आयुर्वेद को वेदांग के समान महत्व प्राप्त है। इसकी निरंतरता का एक प्रमुख आधार प्राचीन काल से उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ (Manuscripts) हैं। ये पाण्डुलिपियाँ ताड़पत्र, भोजपत्र, हस्तलिखित ग्रंथों तथा ललित कला से सुसज्जित पन्नों पर लिखी गई हैं। आयुर्वेद पाण्डुलिपियाँ केवल रोगोपचार का ज्ञान ही नहीं देतीं, बल्कि उस काल की चिकित्सा पद्धति, सामाजिक संरचना, आहार-विहार और सांस्कृतिक परिवेश का भी परिचय कराती हैं।

वर्तमान युग में इन पाण्डुलिपियों का अध्ययन एवं संरक्षण आवश्यक है क्योंकि इनमें छिपा ज्ञान आज भी अनुसंधान, औषध-निर्माण एवं रोग-निदान में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सामग्री एवं विधि (Material and Methodology)

- साहित्यिक स्रोत:** चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय, भैषज्य रत्नावली इत्यादि की पाण्डुलिपियों का अवलोकन।
- पाण्डुलिपि संरक्षण स्थल:** राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (जयपुर), तथा भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट जैसे संस्थानों से संग्रहीत जानकारी।
- अनुसंधान पद्धति:**
 - एतिहासिक-विश्लेषणात्मक (Historical-Analytical Method)।
 - तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study) द्वारा विभिन्न पाण्डुलिपियों में उल्लिखित भेदों का परीक्षण।
 - आधुनिक अनुसंधान दृष्टिकोण से उपलब्ध जानकारी का वैज्ञानिक विश्लेषण।

परिणाम एवं चर्चा (Results and Discussion)

- संरक्षण की स्थिति: अनेक पाण्डुलिपियाँ नमी, कीट या अपूर्णता के कारण क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं।
- भाषिक विविधता: पाण्डुलिपियाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी और क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध हैं।

विषयवस्तु:

- | | |
|--|--------------------------------|
| • औषधि विज्ञान (Dravyaguna) | रोग विज्ञान (Nidana, Chikitsa) |
| • शल्य-शालाक्य विज्ञान (Surgery & ENT) | आहार-विहार विज्ञान |

महत्व:

- औषधियों के स्थानीय नामों और प्रयोग-विधि का संरक्षण।
- अज्ञात या लुप्त औषधियों की जानकारी।
- ऐतिहासिक चिकित्सा ज्ञान का पुनःअन्वेषण।

आधुनिक संदर्भ: डिजिटलाइजेशन, ई-पाण्डुलिपि परियोजनाएँ तथा वैज्ञानिक अनुवाद की दिशा में कार्य प्रगति पर है।

निष्कर्ष (Conclusion)

आयुर्वेद पाण्डुलिपियाँ भारत की अमूल्य धरोहर हैं, जो न केवल चिकित्सीय ज्ञान का भंडार हैं बल्कि भारतीय संस्कृति, समाज और चिकित्सा-परम्परा का दर्पण भी प्रस्तुत करती हैं। इनका संरक्षण, संपादन और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्विश्लेषण आवश्यक है ताकि प्राचीन चिकित्सा ज्ञान वर्तमान चिकित्सा प्रणाली को भी समृद्ध कर सके।

संदर्भ (References)

1. आचार्य चरक, चरक संहिता, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
2. आचार्य सुश्रुत, सुश्रुत संहिता, चौखम्भा ओरिएण्टलिया, वाराणसी।
3. आचार्य वाग्भट, अष्टांग हृदय, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
4. Dash, Vaidya B., Ayurvedic Manuscripts in India, CCRAS Publication, New Delhi.
5. Sharma, Priya Vrat, History of Medicine in India, B.H.U. Press, Varanasi.

सूचना सिद्धांत में विचलन माप का विश्लेषण

पारुल खंडेलवाल, संध्या पारीक

गणित विभाग,

एपेक्स विश्वविद्यालय

सारांश (Abstract)

सूचना सिद्धांत (Information Theory) सूचना के परिमाणीकरण, संचरण और संपीड़न को गणितीय रूप देता है। इस क्षेत्र का एक प्रमुख विचार विचलन माप (Divergence Measure) है, जो दो प्रायिकता वितरणों के बीच असमानता को मापता है। यह शोध-पत्र प्रमुख विचलन मापों—कुलबैक-लाइबलर विचलन (Kullback-Leibler Divergence), जेन्सेन-शैनन विचलन (Jensen-Shannon Divergence), हेलिंजर दूरी (Hellinger Distance) तथा टोटल वेरिएशन दूरी (Total Variation Distance)—का गणितीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इनके अनुप्रयोग मशीन लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, डेटा संपीड़न और जैव-सूचना विज्ञान में रेखांकित किए गए हैं। साथ ही इनके लाभ, सीमाएँ और भविष्य की संभावनाएँ भी दर्शाई गई हैं।

कीवर्ड्स (Keywords) - सूचना सिद्धांत, KL Divergence, JS Divergence, हेलिंजर दूरी, टोटल वेरिएशन, मशीन लर्निंग, NLP, बायोइन्फॉर्मेटिक्स

1. परिचय (Introduction)

सूचना सिद्धांत का प्रस्ताव सबसे पहले क्लॉड शैनन ने 1948 में किया था, जहाँ उन्होंने सूचना को एंट्रॉपी (Entropy) द्वारा मापने की संकल्पना दी (Shannon, 1948)। सूचना सिद्धांत के विस्तार के साथ, यह स्पष्ट हुआ कि केवल एंट्रॉपी ही पर्याप्त नहीं है; विभिन्न वितरणों की तुलना करना भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य से विचलन माप विकसित किए गए।

Kullback और Leibler (1951) ने KL Divergence प्रस्तुत किया, जिसने दो वितरणों के बीच असमानता को मापने का गणितीय आधार प्रदान किया। बाद में Lin (1991) ने Jensen-Shannon

Divergence विकसित किया, जो KL का सममित और सीमित (bounded) संस्करण है। इसके अलावा Hellinger Distance और Total Variation Distance जैसे माप भी व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

2. अनुप्रयोग (Applications)

2.1 मशीन लर्निंग

KL Divergence का उपयोग Variational Autoencoders में होता है (Goodfellow et al., 2014)। JS Divergence Generative Adversarial Networks में प्रयुक्त होता है।

2.2 संचार एवं डेटा संपीड़न

KL Divergence सूचना हानि मापने के लिए उपयोगी है (Cover & Thomas, 2006)।

2.3 प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP)

JS Divergence डॉक्यूमेंट क्लस्टरिंग और भाषा मॉडलिंग में प्रभावी है।

2.4 जैव-सूचना विज्ञान (Bioinformatics)

Hellinger Distance DNA अनुक्रमों और जीनोमिक डेटा तुलना में प्रयुक्त होती है।

3. केस स्टडी (Case Studies)

- भाषा मॉडल तुलना: KL Divergence से यह पता लगाया जा सकता है कि एक अनुमानित भाषा मॉडल वास्तविक डेटा से कितना मेल खाता है।
- DNA अनुक्रम तुलना: Hellinger Distance का प्रयोग दो जैविक अनुक्रमों के बीच समानता मापने के लिए किया जाता है।
- डेटा संपीड़न: KL Divergence यह बताता है कि किसी संपीड़न एल्गोरिथ्म से कितनी सूचना हानि हुई।

4. चुनौतियाँ (Challenges)

- KL Divergence $Q(x)=0$ होने पर परिभाषित नहीं है।
- उच्च-आयामी डेटा (High-dimensional data) में गणना जटिल हो जाती है।
- वास्तविक दुनिया के डेटा शोरयुक्त (noisy) होते हैं, जिससे Divergence मान अस्थिर हो सकता है।

5. भविष्य की संभावनाएँ (Future Directions)

- Quantum Information Theory में नए Divergence Measures का विकास।
- Explainable AI में Divergence के आधार पर मॉडल पारदर्शिता बढ़ाना।
- Big Data Analytics में स्केलेबल approximation तकनीकों का विकास।
- चिकित्सा विज्ञान में Genomic Divergence Measures का प्रयोग।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

विचलन माप सूचना सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। KL Divergence सूचना हानि का माप है, JS Divergence आधुनिक मशीन लर्निंग में अत्यंत उपयोगी है, Hellinger Distance जैव-सूचना विज्ञान में प्रभावी है और Total Variation Distance सांख्यिकी में सरल और लोकप्रिय है। जैसे-जैसे डेटा जटिल और विशाल होता जाएगा, Divergence Measures का महत्व और भी बढ़ेगा।

References (APA 7th Edition)

1. Cover, T. M., & Thomas, J. A. (2006). Elements of information theory. Wiley.
2. Csiszár, I., & Shields, P. C. (2004). Information theory and statistics: A tutorial. Now Publishers.
3. Goodfellow, I., Pouget-Abadie, J., Mirza, M., Xu, B., Warde-Farley, D., Ozair, S., Courville, A., & Bengio, Y. (2014). Generative adversarial nets. Advances in Neural Information Processing Systems, 27.
4. Kullback, S., & Leibler, R. A. (1951). On information and sufficiency. Annals of Mathematical Statistics, 22(1), 79–86.
5. Lin, J. (1991). Divergence measures based on the Shannon entropy. IEEE Transactions on Information Theory, 37(1), 145–151.
6. Nielsen, F. (2020). An elementary introduction to information geometry. Springer.
7. Shannon, C. E. (1948). A mathematical theory of communication. Bell System Technical Journal, 27(3), 379–423.

हस्तलिखित ग्रंथों की परंपरा में अर्थशास्त्र

मिताली कुमावत

एम.ए. अर्थशास्त्र की छात्रा

एपेक्स विश्वविद्यालय

भूमिका

मानव सभ्यता के विकास और उसकी प्रगति का सीधा संबंध ज्ञान के संरक्षण और उसे आगे पहुँचाने से रहा है। छापाखाने या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के अस्तित्व से पहले, पांडुलिपियाँ विचारों को दर्ज करने और पहुँचाने का प्रमुख साधन थीं। इन पांडुलिपियों में केवल धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि शासन, वाणिज्य, चिकित्सा और समाज से संबंधित व्यावहारिक मार्गदर्शन भी संचित था। अर्थशास्त्र में इनका विशेष महत्व है क्योंकि ये इस बात के प्रमाण देती हैं कि प्राचीन समाजों ने उत्पादन, व्यापार, कराधान और संसाधनों के वितरण की व्यवस्था किस प्रकार की। इनके बिना प्राचीन अर्थव्यवस्थाओं की हमारी समझ अधूरी रह जाती।

पांडुलिपि की परिभाषा

'पांडुलिपि' शब्द लैटिन भाषा के दो शब्दों मैनु (हाथ) और स्क्रिप्टस (लिखा हुआ) से बना है, जिसका अर्थ है "हाथ से लिखा गया"। ताड़पत्र, भोजपत्र, चर्मपत्र या कागज पर हाथ से लिखे गए ग्रंथों को पांडुलिपि कहा जाता था। आज अकादमिक भाषा में पांडुलिपि शब्द अप्रकाशित पुस्तकों, लेखों या शोधपत्रों के प्रारूप के लिए भी प्रयुक्त होता है। किंतु ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में यह मुख्यतः उन प्राचीन और मध्यकालीन हस्तलिखित ग्रंथों के लिए प्रयोग होता है जो सभ्यताओं की बौद्धिक धरोहर को संरक्षित रखते हैं।

पांडुलिपियों का महत्व

पांडुलिपियाँ केवल अतीत की अवशेष नहीं हैं, उनका महत्व इस तथ्य में है कि वे हमें सीधे प्राचीन समाजों की विचारधारा और परंपराओं से जोड़ती हैं।

1. **ज्ञान का संरक्षण** – यह बौद्धिक परंपराओं को आगे बढ़ाती हैं और विचारों को पीढ़ियों तक जीवित रखती हैं।
2. **सांस्कृतिक पहचान** – इनमें भाषाएँ, लिपियाँ और अभिव्यक्ति के स्वरूप सुरक्षित हैं जो सभ्यताओं को विशिष्ट बनाते हैं।
3. **ऐतिहासिक प्रमाण** – ये प्राचीन राजनीतिक व्यवस्थाओं, सामाजिक ढाँचों और कानूनों के पुनर्निर्माण में सहायक होती हैं।
4. **वैज्ञानिक योगदान** – अनेक पांडुलिपियों में चिकित्सा, गणित और खगोलशास्त्र का ज्ञान सुरक्षित है, जो प्राचीन उन्नत सोच का परिचायक है।
5. **आर्थिक दृष्टिकोण** – इनमें कर व्यवस्था, व्यापार, संपत्ति अधिकार, राजस्व प्रणाली और धन के वितरण का विवरण मिलता है।

भारत की पांडुलिपि परंपरा

भारत पांडुलिपियों की धरोहर के मामले में अत्यंत समृद्ध है। अनुमानतः लाखों पांडुलिपियाँ मंदिरों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों और निजी संग्रहों में सुरक्षित हैं। ये ब्राह्मी, शारदा, देवनागरी, तमिल, फ़ारसी जैसी अनेक लिपियों में उपलब्ध हैं। इनके विषय धर्म, कानून और दर्शन से लेकर चिकित्सा, खगोलशास्त्र और अर्थशास्त्र तक फैले हुए हैं।

नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों में हजारों पांडुलिपियाँ संग्रहित थीं और ये विद्वत् संवाद के केंद्र थे। मध्यकाल में राजदरबारों और शासकों ने लेखकों व लिपिकारों को संरक्षण दिया, जिन्होंने इन ग्रंथों की नकलें तैयार कीं, उन पर टीकाएँ लिखीं और उनका संरक्षण किया। मुगल दरबार ने तो प्रशासनिक अभिलेख और आर्थिक सर्वेक्षण भी तैयार करवाए, जिनसे उस समय की अर्थव्यवस्था के सूक्ष्म विवरण प्राप्त होते हैं। इस प्रकार भारतीय पांडुलिपियाँ केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि शासन और वाणिज्य की व्यवहारिक मार्गदर्शिका भी हैं।

पांडुलिपियाँ और अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के अध्ययन में पांडुलिपियाँ विशेष रूप से उपयोगी हैं क्योंकि ये दर्शाती हैं कि आधुनिक सिद्धांतों से बहुत पहले समाज संसाधनों की कमी से कैसे निपटते थे।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र – भारत की सर्वाधिक प्रसिद्ध आर्थिक पांडुलिपि। यद्यपि यह राज्यशास्त्र का ग्रंथ है, इसमें कर नीति, बाजार विनियमन, मुद्रा व्यवस्था और सार्वजनिक व्यय का विस्तार से वर्णन है। इसकी अनेक बातें आधुनिक सार्वजनिक वित्त और राजनैतिक अर्थशास्त्र से मिलती-जुलती हैं।

वैदिक एवं महाकाव्य साहित्य – ऋग्वेद, महाभारत और बौद्ध जातक कथाओं में कृषि, विनिमय प्रणाली, श्रम विभाजन और व्यापारी संघों के उल्लेख मिलते हैं।

मध्यकालीन दस्तावेज़ – सल्तनत और मुग़ल काल की पांडुलिपियों में भूमि राजस्व, व्यापार कर और कृषि व्यवस्था का विवरण मिलता है। अकबर का आईन-ए-अकबरी फसलों की पैदावार, मूल्य और कर नीति के आँकड़े प्रस्तुत करता है।

धन और नैतिकता पर ग्रंथ – जैन और बौद्ध पांडुलिपियाँ धन, दान और संयम पर बल देती हैं। ये विचार आज के सतत् विकास और नैतिक उपभोग की चर्चाओं से मेल खाते हैं।

पांडुलिपियों की समकालीन प्रासंगिकता

यद्यपि प्राचीन, पांडुलिपियाँ आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

- ऐतिहासिक अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्निर्माण** – यह दिखाती हैं कि पूर्व-औद्योगिक समाजों में बाजार, कर व्यवस्था और शासन कैसे कार्य करते थे।
- नीतिगत शिक्षा** – न्यायपूर्ण कराधान और प्रजा-कल्याण जैसे विचार आज भी नीति-निर्माण में मार्गदर्शक हैं।
- नैतिक और आचारिक आयाम** – ये याद दिलाती हैं कि अर्थशास्त्र केवल तकनीकी नहीं बल्कि नैतिकता और न्याय से भी जुड़ा है।

4. वैश्विक धरोहर – भारतीय, चीनी और मध्य-पूर्वीय पांडुलिपियाँ दिखाती हैं कि संगठित आर्थिक चिंतन अनेक सभ्यताओं में स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ।

संरक्षण की चुनौतियाँ

पांडुलिपियाँ नाजुक होती हैं और जलवायु, आर्द्रता, कीटों तथा उपेक्षा के कारण नष्ट हो सकती हैं। कई पांडुलिपियाँ ऐसी लिपियों और बोलियों में हैं जिन्हें आज बहुत कम लोग समझते हैं। भारत का राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन और वैश्विक स्तर पर चल रहे डिजिटलीकरण के प्रयास इस धरोहर को बचाने में सहायक हैं। डिजिटलीकरण इन्हें भौतिक क्षरण से तो बचाता ही है, साथ ही विश्वभर के शोधकर्ताओं के लिए उपलब्ध भी कराता है।

अर्थशास्त्र शिक्षा में भूमिका

अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए पांडुलिपियाँ केवल ऐतिहासिक आकर्षण नहीं हैं। ये:

1. कर और शासन की उत्पत्ति को समझने में सहायक हैं।
2. दिखाती हैं कि प्राचीन समाजों ने दुर्लभ संसाधनों का बँटवारा कैसे किया।
3. आधुनिक सिद्धांतों की जड़ों को स्पष्ट करती हैं।
4. आर्थिक व्यवस्थाओं की नैतिक नींव पर चिंतन को प्रेरित करती हैं।

संदर्भ पुस्तकें

पुस्तकें

- कौटिल्या (1992). अर्थशास्त्र (अनुवादक: आर. शमशास्त्री)। बंगलोर: गवर्नमेंट प्रेस। (मूल कार्य लगभग 300 ईसा पूर्व)।
- रे, देब्राज। (1998). डेवलपमेंट इकॉनॉमिक्स। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- ब्लैचर्ड, ओलिवियर। (2017). मैक्रोइकॉनॉमिक्स (7वाँ संस्करण)। पियर्सन।
- वूल्ड्रिज, जे. एम। (2020). इंटीडक्टरी इकॉनॉमेट्रिक्स: अ मॉडर्न अप्रोच (7वाँ संस्करण)। सेंगेज लर्निंग।

शोधपत्र / आलेख

- आल्टेकर, ए. एस। (1937). स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एंशिअंट इंडिया। मोतीलाल बनारसीदास।
- हबीब, इरफान। (1963). द एंग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया (1556–1707)। एशिया पब्लिशिंग हाउस।
- ठाकुर, वी. के। (1995). अर्बन सेंटर्स एंड अर्बनाइजेशन ऐज रिफ्लेक्टेड इन द पाली लिटरेचर। मोतीलाल बनारसीदास।
- चट्टोपाध्याय, बी. डी। (1994). द मेकिंग ऑफ अर्ली मीडिअल इंडिया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

आधुनिक अध्ययन

- सिंह, उपेंद्र। (2008). ए हिस्ट्री ऑफ एंशिअंट एंड अर्ली मीडिअल इंडिया। पियर्सन एजुकेशन इंडिया।
- नेशनल मिशन फॉर मैनुस्क्रिप्ट्स। (2005). मैनुस्क्रिप्ट हेरिटेज ऑफ इंडिया: एन ओवरव्यू। नई दिल्ली: एनएमएम पब्लिकेशन।
- सुब्रह्मण्यम, संजया। (2012). कोर्टली एनकाउंटर्स: ट्रांसलेटिंग कोर्टलिनेस एंड वायलेंस इन अर्ली मॉडर्न यूरेशिया। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- हीस्टरमैन, जे. सी। (1985). द इनर कॉन्फ्लिक्ट ऑफ ट्रेडिशन: एस्सेज इन इंडियन रिचुअल, किंगशिप एंड सोसाइटी। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।



पाण्डुलिपियों का महत्व

डॉ अनीता व्यास
प्रोफेसर अर्थशास्त्र
अपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर

शोधपत्र

पाण्डुलिपि (Pandulipi) का अर्थ है हस्तलिखित दस्तावेज़, पांडपत्र या मूल लेखन, जिसमें प्राचीन ज्ञान, विचार और ऐतिहासिक घटनाओं का अमूल्य संग्रह सुरक्षित रहता है। भारतीय परंपरा में पाण्डुलिपियाँ केवल साहित्यिक या धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि अर्थशास्त्र, राजनीति, कृषि, व्यापार और समाजशास्त्र जैसे विविध विषयों की महत्वपूर्ण जानकारी भी इनमें मिलती है। अर्थशास्त्र (Economics) समाज के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग की प्रक्रियाओं को समझने का विज्ञान है। पाण्डुलिपियों के माध्यम से प्राचीन आर्थिक विचारों और नीतियों को समझने का अवसर प्राप्त होता है।

पाण्डुलिपियों का ऐतिहासिक महत्व

भारत में पाण्डुलिपियों का इतिहास वेदकाल से जुड़ा हुआ है। ताड़पत्र, भोजपत्र, कपड़ा, चमड़ा और कागज पर लिखी गई ये पाण्डुलिपियाँ समय-समय पर राजकीय संरक्षण और शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संकलित की गईं। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और जयपुर, बनारस जैसे केंद्र पाण्डुलिपि संरक्षण के प्रमुख स्थल रहे। इन दस्तावेजों से प्राचीन आर्थिक तंत्र, कर व्यवस्था, व्यापारिक मार्ग, कृषि पद्धति और शिल्पकला का ज्ञान मिलता है।

पाण्डुलिपियों में अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थशास्त्र की जड़ें प्राचीन ग्रंथों में मिलती हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र पाण्डुलिपि स्वरूप में ही पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रहा, जो कर नीति, व्यापारिक नियंत्रण, मुद्रा प्रबंधन और राज्य वित्त के सिद्धांतों का वर्णन

करता है। इसी प्रकार ऋग्वेद, मनुस्मृति, महाभारत, जातक कथाएँ, बौद्ध और जैन ग्रंथों में कृषि, श्रम विभाजन, वस्तु-विनिमय, मुद्रा चलन और बाज़ार व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। मध्यकालीन पाण्डुलिपियों में मुगलकालीन कर प्रणाली, जमीनदारी प्रथा और व्यापारिक करों का विवरण मिलता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य

आज डिजिटल आर्काइव और शोध परियोजनाओं के माध्यम से पाण्डुलिपियों का संरक्षण और अध्ययन हो रहा है। अर्थशास्त्र के शोधकर्ता इन पाण्डुलिपियों से न केवल प्राचीन भारत की आर्थिक संरचना समझते हैं, बल्कि नीतिगत विकास और स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं। आर्थिक विचारों की यह विरासत आधुनिक नीतियों में परंपरा और नवाचार का संतुलन प्रस्तुत करती है।

संदर्भ (References)

1. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, संस्कृत पाण्डुलिपि संस्करण, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
2. शर्मा, आर. एस., भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, 2015।
3. गुप्ता, पी. एल., प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था, मोतीलाल बनारसीदास, 2012।
4. ठक्कर, के., भारतीय पाण्डुलिपि परंपरा, साहित्य भवन, 2018।
5. चट्टोपाध्याय, डी. पी., History of Science, Philosophy and Culture in Indian Civilization, Oxford University Press, 2011।
6. सिंह, जे. पी., Economic History of Medieval India, रावत पब्लिकेशन, 2014।
7. थापर, रोमिला, Early India: From the Origins to AD 1300, Penguin, 2003।
8. श्रीवास्तव, वी. एस., भारतीय हस्तलिखित ग्रंथ और उनका महत्व, भारतीय ज्ञानपीठ, 2016।
9. National Mission for Manuscripts (India), Annual Report, Ministry of Culture, Government of India
10. Altekar, A. S., State and Government in Ancient India, Motilal Banarsidass, 2010।

राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता

स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः

(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री

सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा

एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्ता

महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

पत्रं पुष्पं फलं तोयं, महार्घं ननु वर्तते ।

इच्छन्नपि कथं भक्तः, स्वोपास्यायेदमर्पयेत् ॥२७५॥

पत्र, पुष्प, फल और तोय आज बहुत महँगा हो गया है । चाहता हुआ भी भक्त इसे अपने उपास्य देव को कैसे अर्पित करे ?

Nowadays, leaves, flowers, fruits and water are very expensive. How will the devotee adore the chosen deity?

परस्त्रिया यथा वासः, पुरुषाय न शोभते ।

तथाऽन्य-पुरुषेणापि, स्त्रियै वासो न शोभते ॥२७६॥

परायी स्त्री के साथ रहना जैसे पुरुष को शोभा नहीं देता है, वैसे ही पराये पुरुष के साथ रहना स्त्री को भी शोभा नहीं देता है ।

It doesn't suit man to live with another woman. In the same way, it does not suit a woman to live with another man.

पर – स्वागत – सज्जायां, विस्मरेन्न निजान् जनान् ।

यदि ते विस्मृताः किं स्यात्, स्वागतं क्वापि सुन्दरम् ? ॥२७७॥

दूसरों के स्वागत की तैयारी में आत्मीयजनों को नहीं भूल जाना चाहिये । यदि उनको भुला दिया तो उनकी अनुपस्थिति में क्या कहीं सुन्दर स्वागत हो पायेगा ?

Relatives should not be forgotten while preparing the reception/welcoming for somebody. But if they were invited will the reception be beautiful/graceful if they don't come?

परिचिन्वन्ति ये नैव, प्राच्यां स्वां ज्ञानसम्पदाम् ।

ततस्ते वञ्चिताः किं न, विषीदन्ति सदैव हि ? ॥२७८॥

जो अपनी प्राचीन ज्ञान-सम्पदा को पहिचानते नहीं हैं, क्या वे उस ज्ञान-सम्पदा से वञ्चित हुए सदा ही दुःखी नहीं रहते हैं ?

Won't the one who does not recognise their own culture's wealth be always unhappy without it?

परेण व्यवहारः स, कार्यो यः स्वात्मनेष्यते ।

एवं कृते न कस्यापि, दुःखं जन्म ग्रहीष्यति ॥२७९॥

दूसरे के साथ वही व्यवहार करना चाहिये जो अपने साथ चाहा जाता है । ऐसा करने पर किसी के लिये भी दुःख जन्म ग्रहण नहीं करेगा ।

Others should be treated in the same way, as we want to be treated. Doing it like this, nobody will have an unhappy life.

परोपजीवि-कीटास्ते, नाध्यवस्यन्ति ये स्वयम् ।

तेऽन्येषां रक्तमाचूष्य, जीवन्ति मत्कुणा इव ॥२८०॥

दूसरों के सहारे जीवित रहने वाले वे कीटाणु हैं जो स्वयं श्रम नहीं करते हैं । वे तो दूसरों का खून चूसकर खटमलों की तरह जीवित रहते हैं ।

Those who live their lives depending on others are like workless germs. Like the bedbugs, they are sucking others blood.

पवित्रं यत्-समुद्देश्यं, यच्च सर्वहितावहम् ।

तदीयं स्थगनं कस्य, बहुखेदकरं नहि ? ॥२८१॥

जिसका उद्देश्य पवित्र हो और जो सभी का हितकारी हो, उसका स्थगित हो जाना किसके लिये बहुत खेदकारी नहीं होता है ?

Who does not feel very sorry for the postponing of something pure and beneficial to all?





प्रकाशक : **विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान** - कीर्ति नगर, श्याम नगर, सोढाला, जयपुर

Website : vgda.in Youtube : www.youtube.com/c/vishwagurudeepashram E-mail : jaipur@yogaindailylife.org